भारत में होम रूल आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान दो प्रमुख भारतीय नेताओं, एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक द्वारा शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण राजनीतिक अभियान था। इस आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन और होम रूल को बढ़ावा देने की मांग की थी। होम रूल आंदोलन की प्रमुख विशेषताएं और परिणाम इस प्रकार हैं:

पृष्ठभूमि:

- होम रूल आंदोलन भारतीयों के बीच स्वशासन के लिए बढ़ते असंतोष और आकांक्षाओं के संदर्भ में उभरा।
- ब्रिटिश थियोसोफिस्ट और भारतीय राष्ट्रवादी एनी बेसेंट ने 1916 में आंदोलन शुरू किया था, और एक अनुभवी स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने लगभग उसी समय एक समानांतर आंदोलन शुरू किया था।
- इस आंदोलन का उद्देश्य जनता की राय का उपयोग करना और ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत के लिए स्व-शासन की मांग करना था।

होम रूल आंदोलन की मुख्य विशेषताएं:

1. होम रूल की मांग: होम रूल आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत के लिए स्वशासन की मांग करना था। इस आंदोलन ने महत्वपूर्ण स्तर की स्वायत्तता की मांग की, जैसी कि कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे प्रभुत्व वाले देशों को प्राप्त थी।
2. नेतृत्व: इस आंदोलन का नेतृत्व प्रमुख नेताओं ने किया था। एनी बेसेंट ने मद्रास में और बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने बड़े पैमाने पर यात्रा की, सार्वजनिक समारोहों को संबोधित किया और होम रूल के बारे में जागरूकता फैलाई।
3. समाचार पत्र और प्रचार: आंदोलन ने अपना संदेश फैलाने के लिए समाचार पत्रों और प्रचार का उपयोग किया। एनी बेसेंट ने "न्यू इंडिया" प्रकाशित किया, जबकि तिलक ने व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए "केसरी" और "मराठा" का इस्तेमाल किया।
4. जन लामबंदी: इस आंदोलन का उद्देश्य सार्वजनिक बैठकें, व्याख्यान और जुलूस आयोजित करके जनता को संगठित करना था। इसका उद्देश्य होम रूल के समर्थन में विभिन्न समुदायों और धार्मिक समूहों को एकजुट करना भी था।
5. ब्रिटिश शासन का विरोध: आंदोलन ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को हटाने के साथ-साथ दमनकारी कानूनों और प्रतिबंधों को रद्द करने का आह्वान किया।

परिणाम और प्रभाव:

1. जागरूकता और राजनीतिक लामबंदी: होम रूल आंदोलन ने भारतीय जनता के बीच राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने और राजनीतिक भागीदारी की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2. गांधी जी का प्रवेश: हालाँकि होम रूल आंदोलन अपने आप में महत्वपूर्ण था, इसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी के बाद के नेतृत्व के लिए आधार तैयार किया।
3. सरकार की प्रतिक्रिया: ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने आंदोलन को संदेह की दृष्टि से देखा और बेसेंट और तिलक सहित कई नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।
4. परंपरा: हालाँकि होम रूल आंदोलन से तत्काल स्वशासन नहीं मिला, लेकिन इसने भारतीय स्वतंत्रता के लिए व्यापक संघर्ष में योगदान दिया। इसने भारतीय लोगों की स्व-शासन के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया और बड़े आंदोलन में भूमिका निभाई जिसके कारण अंततः 1947 में भारत को आजादी मिली।

होमरूल आंदोलन को भारत के स्वशासन के संघर्ष के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में याद किया जाता है। इसने ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर अधिक स्वायत्तता की मांग करने के लिए भारतीय नेताओं और भारतीय लोगों के दृढ़ संकल्प को उजागर किया और स्वतंत्रता की खोज में भविष्य की राजनीतिक सक्रियता और आंदोलनों के लिए आधार तैयार किया।